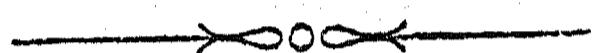


श्री

तुकारामवाचा आणि त्यांचे शिष्य

यांच्या

अभंगांची जाथा.



“ तुकाराम तुक रामसे दोनों सेतु अभंग ।
उनका सेतू भंग गया इनका सेतु अभंग ॥ ”

तुकाराम तात्या यांनी

तत्वविवेचक ग्रंथप्रसारक मंडळीसाठी
छापून प्रसिद्ध केली.

भाग २ रा.

(या पुस्तकाची मालकी सन १८६७ च्या आकट २९ प्रमाणे प्रसिद्ध करणाराने
आपल्या स्वाधीन ठेविली आहे.)

सन १८८९.

मुंबईत,
“ सुबोधप्रकाश ” आपखान्यांत छापिली.

विषयानुक्रम.

विषय

ज्ञानप्रकरण.

(पुढे चालू)

| | |
|----------------------------|-----|
| बाधपर अभंग | 2 |
| जनांस शिक्षा | ११२ |
| दांभिकांस शिक्षा | १७६ |
| ब्राह्मणांस शिक्षा | २०४ |
| शाकांस शिक्षा | २०६ |
| झाति किंवा वर्णविचार | २१३ |
| कल्पीचा महिमा | २१६ |
| कन्याविक्रय | २१९ |
| हिंसानिषेध | २२० |
| अभाविक, नास्तिक व ताकिक | २२० |
| व्रतांचा महिमा | २२४ |
| शूद्र दैवतांचा उपहास | २२७ |
| ज्ञानबोध | २२८ |

पृष्ठ.

विषय

| | |
|--------------------------|-----|
| चिंचवडच्या देवास आप- | |
| ल्या स्वरूपाचा बोध | |
| ज्ञावा म्हणून उपदेश | |
| केला | २३३ |
| अनघड सिद्धाच्या शब्दे- | |
| करून रामेश्वरभट्टाच्या | |
| शरीरीं दाह झाला तो | |
| या अभंगे शमला | २३३ |
| शिवाजीराजे यांनी स्वा- | |
| मींस अबद्धागिरी, घोडा | |
| कारकून असे न्यावयास | |
| पाठविले, खांस परत पा- | |
| ठवून राजास व अष्टप्र- | |
| धानांस पाठविलेले अ- | |
| भंग. | २३४ |
| शिवाजी राजे स्वतः दर्श- | |
| नास आले व स्वामीपुढे | |
| जवाहिरांनी भरलेलें ताट | |
| ठेविलें ते अभंग.. | २३५ |
| अळकापुरी (आळंदी) त | |
| ब्राह्मण धरणे बसून बे- | |
| ताळीस दिवस उपवासी | |
| होता, खास ज्ञानोबांनी | |
| स्वप्रीं येऊन सांगितलें | |
| कीं, देहूस तुकोबापावर्णी | |

चमत्कार.

| | |
|-------------------------------|-----|
| लोहगांवीं कीर्तनांत मेलें मूळ | |
| जीत झालें, तेसमर्यीं स्वा- | |
| मींनीं अभंग केले ते | २३२ |
| चिंचवडचे देवांनीं तुकोबांस | |
| जेवावयास नेलें असतां | |
| सांस चमत्कार दाखवि- | |
| ला ते अभंग..... | २३२ |

पृष्ठ.

विषय

| | पृष्ठ. |
|---|--------|
| जाणे, ब्राम्हण स्वामीं पै- आला सास करून दिले- ले अभंग | २३७ |
| बरील अभंग व त्यांबरोबर दिलेला नारळ टाकुनि- यां ब्राम्हण आळंदीस गेला त्यावर स्वामीनीं झानेश्वरास पत्र लिहिले- ते अभंग | २३८ |
| झानेश्वरांची स्तुती.... | २४२ |
| बाराणसीस यात्रा चालली तेव्हां तुकारामबाबांनीं भागीरथीस पत्र धाडिले- ते अभंग | २४२ |
| तुकारामबाबांनीं वारकन्यांब- रोबर पंढरीनाथांस पत्र पाठविले ते अभंग | २४३ |
| वारकरी परत येत तोंपर्यंतची मनाची स्थिति... | २४९ |
| वारकरी परत आल्यानंत- रचे अभंग | २५२ |
| नामदेवाची बाकी फेडली.. | २५३ |
| साखिभाव किंवा विरहिणीचे अभंग | २५४ |

निर्वाण प्रकरण.

| | |
|---|-----|
| आळंदीस एकादशीस कीर्त- नकाळीं काया ब्रम्ह कर- ण्याविषयीं संकल्प केला | २६१ |
|---|-----|

विषय

| | पृष्ठ. |
|--|--------|
| मग शंकाकारांस उत्तर दिले | २६१ |
| पुनः शंकाकारांस प्रत्युत्तर दिले | २६२ |
| लोहगांवच्या लोकांच्या प्रे- मावरून तुकोबांचा सां- च्याकडे ओढा... | २६२ |
| लोहगांवीं कीर्तन करीत अ- सतां परचक्रानें गांव लु- टून लोकांस त्रास दिला; तो सहन झाला नाही, म्हणून आपणांस वैकुंठीं नेण्यास देवाचा धांवा केला | २६२ |
| आपणा स्वतःस दुःख झाले म्हणून धांवा केला नाही, लोकांचे दुःख पहावत नाही म्हणून धांवा केला | २६३ |
| ऐसी देवास आण घालून देहुग्रामास येऊन सभों- वते संतसमुदाय असून मध्ये आपण बसले तों अकस्मात जरा प्रत्यक्ष वृद्ध ल्लीच्या रूपे येऊन कानीं सांगितले कीं काळ सन्निध आला.... | २६४ |
| तेव्हां तुकारामबाबा परम सावध होऊन पत्र लिहून मनोदुतांहातीं शेषशयनीं श्रीनारायणास धाडिले | २६५ |

विषय

| | |
|--|--------|
| पत्र पाठविल्यानंतर ग- | पृष्ठ. |
| रुडाची, लक्ष्मीची व शेषाची प्रार्थना केली. २६६ | |
| हे पत्र नारायणानें पाहून विष्णुस आज्ञा केली कीं, तुकारामास देहासहित वै- कुंठास आणून तेथील सुख दाखवून येथे आणून घालावा, तेव्हां विष्णुनें सनकादिकांस समाचारा- स पाठविले २६७ | २६७ |
| तेव्हां सनकादिकांनीं तुको- बांस वृत्तांत सांगितला कीं श्रीनारायणाचे आज्ञे- वरून विष्णु तुम्हास दे- हासहित वैकुंठास न्याव- यास सत्वरच येतील असें सांगून सनकादिक वैकुंठास गेले. तेव्हां तुकोबा परम समाधान पावून अभंग बोलले २६७ | |
| वैकुंठास जाण्यापूर्वी पंढरीना- थास भेटावे ह्याणून सांस पत्र पाठविले २६७ | २६७ |
| पत्र वाचतांच पंढरीनाथ, रु- क्मिणी वगैरे खिया व पुङ्डलिकादि भक्तांसह भे- टीस निघाले असतां तुकारामबाबांस सुचिन्हे होऊं लागली.... २६८ | २६८ |

विषय

| |
|--|
| पृष्ठ. |
| सत्वरच आपणांस श्रीहरीचे दर्शन होईल ह्याणून तुका- रामबाबा परम संतोष पावले, इतक्यांत यमधर्मा- ने काळ्यमदूतांस आज्ञा- पिले कीं सत्वर जाऊन तुम्ही तुकारामबाबांस ने- मन, करून सांगणे कीं, आपण कृपा करून यावे, ऐसें ऐकून काळ्यमदूतां- नीं येऊन तुकारामबाबांस नमून सांगितले तेव्हां स्वामी अभंग बोलले.... २६८ |
| २६८ |
| ऐसें बोलून तुकारामबाबांनीं वैकुंठवासी देवानें सत्वर यावे, ह्याणून सांचा धांवा केला तो अभंग २६९ |
| २६९ |
| असा धांवा केल्यावर देव येत आहेत असें पाहिले २६९ |
| हे यमाच्या किंकरांनीं पाहून ते तुकारामबाबांस सो- इून पळाले २६९ |
| २६९ |
| याचवेळेस पंढरीनाथ आप- ल्या परिवारासह आले. २७० |
| २७० |
| ऐसें बोलून आपले समा- गर्मीं संतव महंत होते सा- साहित पंढरीनाथांस सा- मोरे परम सद्गावे लोटा- गणीं चालले २७० |
| २७० |

| विषय | पृष्ठ. |
|---|--------|
| नंतर नारायणाचे स्तबन केले मग तुकारामबाबांनी देवांस घरीं येण्यास आमंत्रण दिले | २७० |
| देव घरीं आल्यावर त्यांज- बळ आपल्या स्थितीचे वर्णन केले | २७१ |
| देवांस व संतांस पावहणेर केला | २७१ |
| देवांस आवडीने कण्यांची पेज सेवन केली | २७१ |
| देव व भक्त जेवल्यानंतर लक्ष्मी, सत्यभामा, हु- किमणी वगैरे खिया तुकारामबाबांच्या गृहीं प्रवेशून जिजाबाईच्या संसारास हांसल्यावरून ती तुकारामबाबांस कठो- रोत्तरे बोलली.... | २७२ |
| फालगुन शुद्ध एकादशीच्या दिवशीं देवासमोर-उभे राहून कीर्तन केले | २७४ |
| ये समयीं तुकारामाच्या दर्श- ने करून पुनीत होण्यास व्रते, पर्वकाळ इसादि मूर्तिमंत आलीं.... | २७५ |
| नंतर इंद्रादि देवगण वगैरे दर्शनास आले.... | २७६ |
| याप्रमाणे एकादशीपर्यंत जा- गर केल्यानंतर द्वादशीस | |

| विषय | पृष्ठ. |
|---|--------|
| पारणे सोडण्यास तुका- रामबाबांस संतांसह आ- पल्या उताऱ्यास देवांने आमंत्रण दिले.... | २७७ |
| देवांने विचारल्यावरून तु- कारामबाबांनीं देवांस संगाते जेवण्यास विनंती केली | २७७ |
| जैसे माता आवडीने मुलास स्तनपान करविले तैसे देव तुकोबांस प्रेमांने वोरसतात | २७७ |
| प्रथाणकाळीं तुकारामबाबांनीं ह्यांस सांगाते यावे ह्य- पून बोलणे केले, ते स- मर्यां संसार सोडून येत नाहीं असे म्हटल्यावरून उपदेश केला..... | २७८ |
| तुकारामबाबा वैकुंठास चा- लले असे समजून जि- जाबाई खांस सांगाते प्रवासाची सामोग्री व कांहीं पैसा घेऊन जा असे म्हणाली तेव्हां बोलले | २७९ |
| तेव्हां तुकारामबाबा म्हणाले कीं आतां वैकुंठास च- लावे, मग तुकारामबाबा आपले समागमे संत होते | |

विषय

| | पृष्ठ. |
|---|--------|
| सांस व बंधु व स्त्रीपुत्र यांस बोलिले कीं, मी वैकुंठास जातों, तुम्ही सकल स- मागमें चला, तुम्हांसही नेतों, तेव्हां अभंग बोलले २७९ | |
| सांगातें कोणी येत नाहीं असें पाहून तुकारामवावा तेथू- न निघाले २८० | |
| मग अभंग गात गात राउ- ळीं परत आले २८० | |
| सानंतर तुकारावावांनीं भजन करून देवास आ- रती करून लळीत केले. २८० | |
| लळीतें २८१ | |
| सप्तरात्री देव व भक्त यांवरो- वर क्रमून निर्वाणकाळ समीप आला असें पाहून इंद्रायणीच्या कांडीं भज- न करीत चालले, तेव्हां देवादि विमानात वसून समारंभ पाहावयास आ- ले २८२ | |
| प्रयाणापूर्वीं पंढरीनाथांनीं तुकारामवावांस प्रायश्चि- त्त घेण्यास सांगितले २८२ | ५८२ |
| स्नानादि विधि सरल्यानंतर तुकारामवावांनीं देवांस व पंच भूतांस आपआ- पले भाग विभागून देऊ- न देह निर्वाण केला २८२ | |

विषय

| | पृष्ठ. |
|--|--------|
| अभिमानाचा साग करून दे- हावें निरसन केल्यावर सर्वांच्या क्रुणांतून मुक्त होऊन प्रतिज्ञा केली हो- ती तिज प्रमाणे आपली काया ब्रह्म केली २८४ | |
| तुकारामवावा आपल्या साम- र्थ्यानें देहरिसन करू- न तत्वीं लीन झाले अ- सतां देवानें ध्यानकरून हृदयामध्ये चितनाचे ठा- यीं अनुसंधान लावून सां- स प्रगट केलें २८५ | |
| या प्रमाणे तुकारामवावांस प्रगट केल्यावर विष्णु स्मणाले आतां वैकुंठास चलावें, तेव्हां समागमें घालवित आले होते सां- कडे कृपादृष्टीनें अवलोक- न करून वैकुंठास जाव- यास निघाले तेव्हां हे अभंग बोलले २८६ | |
| मग तुकारामवावा देवांस स्मणाले कीं आतां सत्वर प्रयाण करावें. हे ऐकून देव व भक्त यांनी सांचे फार सत्वन केले. ते सम- यीं रामेश्वरभट्टानें स्थाले- ला अभंग २८७ | |

विषय

पृष्ठ.

ऐसी संतांची स्तुती ऐकून
अहंकृति उत्पन्न होईल व
तेणे करून देवाजीचे पाय
अंतरताली असें तुकाराम
बाबा ह्याणाले २८७

या प्रसंगी आपल्या समागमी
जनांस आलिंगन देऊन
तुकारामबाबांनी उपदेश
केला २८८

तुकारामबाबांची शेवटली
विनवणी.... २८८

इतके बोलून तुकारामबाबा
देवांसमागमें वैकुंठास
गेले तेव्हां समागमें घा-
लवीत गेले होते ते ह्याणा-
ले, कोणी देह वैकुंठीं ने-
ला होता काय ? कोणी
ह्याणाले डोहांत गेले अस-
तील, कोणी ह्याणाले भा-
गीरथींत देह टाकला अ-
सेल, इतक्यांत हातीच्या
टाळासी गोंवलेले पत्र व-
रून पडले २९३

ते पत्र वाचून सकळ समाधा-
न पावून स्नानकरून श्री-
च्या देवळीं येऊन विठो-
बांस नमून आपल्या घरीं
गेले. परंतु कान्होबा, जि-
जाबाई, महादेव, विठोबा

विषय

पृष्ठ.

हीं चौधेजणे देवळांत व-
सून देवाशीं भांडूं लाग-
लीं, तेव्हां देवानें गरुडास
तुकारामबाबांकडे पाठवि-
ले. गरुडानें वैकुंठीं पाहून,
शेषशयर्नीं जाऊन तुका-
रामबाबास वृत्तांत सांगि-
तला. तेव्हां तुकाराम-
बाबांनीं पत्र लिहून दिलें
ते गरुडानें आणून कान्ह-
यापाशीं दिले २९४

तुकारामबाबा वैकुंठास
गेल्यानंतर पंढरीनाथा-
ने शोक केला २९५

तुकारामबाबांनीं निसपा-
टासाठीं स्वर्गाहून पाठ-
विलेले अभंग २९६

आख्याने

ओऱ्याचे अभंग २९९
बाळक्रीडा ३०७
काळा चेंडूफळी ३३६
कोडे ३३७
फुगड्या ३४०
लखोटा ३४१
हुंबरी ३४२
कांडण... ३४२
आडसण दळण ३४३
दळण ३४३

| विषय | पृष्ठ. |
|-------------------------|--------|
| हाल | ३४४ |
| सुतुतु | ३४५ |
| टिपरी | ३४८ |
| विह्वांशु | ३५१ |
| मृदंगपाद्या | ३५८ |
| ढांका | ३७० |
| पांगूळ | ३७२ |
| वासुदेव | ३७५ |
| गावगुंड | ३७६ |
| जोगी | ३७६ |
| गौधळी | ३७६ |
| जैन | ३७७ |
| फकीर | ३७७ |
| सरवदा | ३७७ |
| मुङ्डा | ३७८ |
| भराड | ३७८ |
| डोईफोडा | ३७९ |
| मलंग | ३७९ |
| गाई | ३७९ |
| दिंडीगाणे | ३८० |
| दरवेस | ३८० |
| बैद्यगोळी | ३८० |
| गौधळ | ३८१ |
| कावडे | ३८३ |
| सौन्या | ३८५ |
| लळीत | ३८९ |
| अशिर्वदि | ३९१ |
| दसरा | ३९३ |
| घोंगड्याचे अभंग | ३९५ |

| विषय | पृष्ठ. |
|---------------------------|--------|
| रामचरित्र | ३९७ |
| हनुमंत स्तुती | ४०१ |
| कार्तिकीचा सोहळा | ४०२ |
| पंढरपूर | ४०२ |
| मनास वोध | ४०३ |
| जोहार अभंग | ४०६ |
| ब्रह्मचर्याश्रम | ४०७ |
| गृहस्थाश्रम | ४०७ |
| संन्यास | ४०८ |
| एकनाथस्तुति | ४०८ |
| धुर्वक अभंग | ४०८ |
| पाईक अभंग | ४१३ |
| सेतावर अभंग | ४१५ |
| उत्तराधिपदे | ४१७ |
| दोहोरे | ४२० |
| येकाखडी अभंग | ४२१ |
| भुपाळ्या अभंग | ४२२ |
| पाळणे | ४२४ |

भगवद्गीतेचे अभंग.

| | |
|----------|-----|
| अध्याय १ | ४४० |
| अध्याय २ | ४५६ |
| अध्याय ३ | ४६६ |
| अध्याय ४ | ४७१ |
| अध्याय ५ | ४७७ |
| अध्याय ६ | ४८१ |
| अध्याय ७ | ४८८ |
| अध्याय ८ | ४९३ |
| अध्याय ९ | ४९७ |

| विषय | पृष्ठ. | विषय | पृष्ठ. |
|--------------------------|--------|-----------------------------|--------|
| अध्याय १० | ५०३ | गर | ५९१ |
| अध्याय ११ | ५१० | कालयवनवध... ... | ५९१ |
| अध्याय १२ | ५१९ | हुकमांगद राजाचे चरित्र ... | ५९३ |
| अध्याय १३ | ५२२ | अंबकुषी राजाचे चरित्र ... | ५९६ |
| अध्याय १४ | ५२७ | भानुदासचरित्र ... | ६०१ |
| अध्याय १५ | ५३१ | श्रीयाळचरित्र ... | ६०४ |
| अध्याय १६ | ५३५ | धांवा दौपदीचा ... | ६०५ |
| अध्याय १७ | ५३८ | मयुरध्वजचरित्र ... | ६०६ |
| अध्याय १८ | ५४३ | सुदामचरित्र ... | ६०७ |
| <hr/> | | | |
| चरित्रे. | | | |
| नृसिंहअवतारचरित्र ... | ५५७ | दामाजीपंताचे चरित्र ... | ६१० |
| प्रलहादचरित्र ... | ५५८ | चोख्यामेळ्याचे चरित्र पहिले | ६११ |
| परशुरामअवतारचरित्र ... | ५६५ | चोख्यामेळ्याचे चरित्र दुसरे | ६१३ |
| श्रीरामजन्म | ५६६ | दौपदीवस्त्रहरण ... | ६१३ |
| श्रीरामचरित्र... | ५६७ | सांवतामाळीचरित्र ... | ६१७ |
| सीताशोक | ५६९ | हरिपाळचरित्र ... | ६१८ |
| श्रीकृष्णजन्म... | ५७० | पदे | ६२० |
| कृष्णचरित्र | ५७५ | आरत्या | ६२८ |
| | | पुरवणी | ६३८ |

श्रीविद्वल.

तुकारामबाबांची गाथा.

भाग दुसरा.

बोधपर अभंग.

॥ ४७४४ ॥ अधिकार तैसा दावियेला मार्ग । चालतां हैं सग कळौ येते ॥ १ ॥ जाळूं नये नांव पावलेनि पार । पागील आधार बहुतांचा ॥ २ ॥ तुका ह्यणे रोग वैद्याचे अंगीं । नाहीं करी जगीं उपकार ॥ ३ ॥

॥ ४७४५ ॥ आहे तें सकळ कृष्णाचि अर्पण । न कळतां मन दुजे भावी ॥ १ ॥ ह्यणजनी पाठी लागतील भूते । येती गवसीत पांचजणे ॥ २ ॥ ज्याचे या वंचले आठव न होतां । दंड या निमित्ताकारणे हा ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे काळे चेपियेला गळा । मी मी वेळोवेळा करीतसे ॥ ४ ॥

॥ ४७४६ ॥ पराविया नारी माडलीसमान । मानिलिया धन काय वेचे ॥ १ ॥ न करितां परनिंदा परद्रव्य अभिलाष । काय तुमचे यास वेचे सांगा ॥ २ ॥ बैसलिये ठार्यो ह्यणतां रामराम । काय होय श्रम ऐसे सांगा ॥ ३ ॥ संतांचे वचनीं मानितां विश्वास । काय तुमचे यास वेचे सांगा ॥ ४ ॥ खरे बोलतां कोण लागती सायास । काय वेचे यास तुमचे सांगा ॥ ५ ॥ तुका ह्यणे देव जोडे याचसाठीं । आणीक ते आटी न लगे कांहीं ॥ ६ ॥

॥ ४७४७ ॥ चित्त समाधाने । तरी विष वाटे सोने ॥ १ ॥ बहू खोटा अतिशय । जाणां भले सांगों काय ॥ २ ॥ मनाच्या तळमळे । चंदने ही अंग पोळे ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे दुजा । उपचार पीडा पूजा ॥ ४ ॥

॥ ४७४८ ॥ परिमळ म्हूण चोळूं नये फूल । खाळं नये मूल आवडते ॥ १ ॥ काय एक नव्हे धरितां अंतरीं । कासवचे परी वेळोवेळां ॥ २ ॥

मौतियाचें पाणी चाखूँ नये स्वाद । यंत्र भेदुनी नाद पाहूँ नये ॥ ३ ॥ कर्मफल ह्यणुनी इच्छूँ नये काम । तुका ह्यणे वर्ष दावूँ लोकां ॥ ४ ॥

॥ ४७४९ ॥ दुर्जनासि करी साहा । तो ही लाहे दंड हे ॥ १ ॥ शिंदळीच्या कुंटणी वाटा । संग खोटा खोव्याचा ॥ २ ॥ येर येरा कांचणी भेटे । आगी उठे तेथूनी ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे कापूँ नारें । पुढे आणिके शिकविती ॥ ४ ॥

॥ ४७५० ॥ करावी ते पूजा मनोंचि उत्तम । लौकिकाचें काय काय असे ॥ १ ॥ कळावें तयासि कळे अंतर्रिंचें । कारण तें साचें साचा अंगी ॥ २ ॥ अतिशया अंतीं लाभ किंवा घात । फळ देतें चित्त बीजा ऐसे ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे जेणे राहे समाधान । ऐसे तें भजन पार पावी ॥ ४ ॥

॥ ४७५१ ॥ एकादशीव्रत सोमवार न करिती । कोण सांची गति होइल नेणों ॥ १ ॥ काय करूँ बहु वाटे तळमळ । आंधरीं सकळ बहिर्मुख ॥ २ ॥ हरिहरां नाहीं बोटभरी वाती । कोण सांची गति होइल नेणों ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे नाहीं नारायणीं प्रीति । कोण सांची गति होइल नेणों ॥ ४ ॥

॥ ४७५२ ॥ नव्हे आराणूक संवसारा हातीं । सर्वकाळ चित्तीं हाचि धंदा ॥ १ ॥ देवधर्म सार्दीं पडिला सकळ । विषयीं गोंधळ गाजतसे ॥ २ ॥ रात्रि दीस नपुरे कुटुंबाचें समाधान । दुर्लभ दर्शन ईश्वराचें ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे आत्महत्यारे घातकी । थोर होते तुकी नारायणीं ॥ ४ ॥

॥ ४७५३ ॥ स्मशान ते भूमि प्रेतरूप जन । सेवाभक्तिहीन ग्रामवासी ॥ १ ॥ भरतील पोट श्वानाचिया परी । वस्ति दिली घरीं यमदुतां ॥ २ ॥ अपूज्य लिंग तेथें अतित न घे थारा । ऐसी वस्ती चोरां कंटकांची ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे नाहीं ठावी स्थिति मती । यमाची निश्चिती कुळवाढी ॥ ४ ॥

॥ ४७५४ ॥ भोगे घडे साग । खागे अंगा येती भोग ॥ १ ॥ ऐसे उफराटे वर्ष । धर्मा अंगीं च अर्धर्म ॥ २ ॥ देव अंतरे तें पाप । खोटे उगवा संकल्प ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे भिड खोटी । लाभ विचारावा पोटीं ॥ ४ ॥

॥ ४७५५ ॥ चोरे चोरातें करावा उपदेश । आपुला अभ्यास असेल तो ॥ १ ॥ शिंदळीच्या पार्गे वेचितां पाउले । होईल आपुले तिच्या ऐसे ॥ २ ॥ तुका ह्यणे भितों पुढिलिया दत्ता । ह्यणजनी चित्ता उपजली ॥ ३ ॥

॥ ४७२६ ॥ दया तिंच नांव भूतांचं पाळण । अणीक निर्देशण कं-
टकांचे ॥ १ ॥ पाप याचे नांव न विचारितां नीत । भलतेंचि उन्मत्त करी
सदा ॥ २ ॥ धर्म नीतीचा तो ऐकुनी वेव्हार । निवडिले सार असार ते
॥ ३ ॥ तुका ह्यणे धर्म रक्षावयासाठी । देवासही आटी जन्म घेणे ॥ ४ ॥

॥ ४७२७ ॥ थोडे परी निरं । अवीट तें व्यावें खरें ॥ १ ॥ ध्यावें जेणे
नये तुटी । वीज वाढे वीजा पोटी ॥ २ ॥ चित् ठेवी ज्वाही । आणिकांशां
चाढ नाही ॥ ३ ॥ आपुले तें द्वित फार । तुका ह्यणे खरें सार ॥ ४ ॥

॥ ४७२८ ॥ येणे नाही उरों आले अवतार । येरते पापर जीव
किती ॥ १ ॥ विषयाचे झणी व्हाळ लोळिगत । चेवालया अंत न लगे
मज ॥ २ ॥ वाहोनियां भार कुंथसील ओझें । नव्हे तेंचि माझें धीता
लाग ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे केसी नाहीं याची लाज । संतीं केशीराज सा-
धियेला ॥ ४ ॥

॥ ४७२९ ॥ चालावा पंथ तो पाविजे ला ठाया । ऐकिल्या वांयां वा-
रता ला ॥ १ ॥ एका जी वोजे पडतसें पायां । भावाचि तें जायावाट नव्हे
॥ २ ॥ व्याळी कुमारीचा अनुभवें अनुभव । सांगतां तो भाव येत नाहीं
॥ ३ ॥ तुका ह्यणे येणे पाहिजे आराले । विवीं निवळले तरी भासे ॥ ४ ॥

॥ ४७३० ॥ सदैव तुम्हां अवघें आहे । हातपाय चालाया ॥ १ ॥ मुखीं
वाणी कानीं कीर्ति । डोके मूर्ती देखाया ॥ २ ॥ अंध वहिर ठकलीं किती ।
मुकीं होती पांगुळे ॥ ३ ॥ वरास आग लावूनी जागा । न पळे तो गा वाचेना
॥ ४ ॥ तुका ह्यणे जागा हिता । कांहीं आतां आपुल्या ॥ ५ ॥

॥ ४७३१ ॥ आपुलाल्या तुम्ही रूपासी समजा । कासया वरजा
आरसिया ॥ १ ॥ हे तों नव्हे देहवुद्धीचे कारण । होईल नारायणे दान
केले ॥ २ ॥ वत्रुचिया वाणे वर्मासि स्पर्शावे । हे तों नाहीं ठावें मोकलित्या
॥ ३ ॥ तुका ह्यणे वहु मुख्य हा वचना । सत्याविण जाणा चाल
नाहीं ॥ ४ ॥

॥ ४७३२ ॥ विटाक तो परद्रव्य परनारी । येथुनि जो दूरी तो सौंबद्धा
॥ १ ॥ गर्दं पद्यं कांहीं न धरावी उपाधी । स्वाधिनचि वुद्धि करूनी ठेवा
॥ २ ॥ विचारावे कांहीं करावे स्वाहित । पापपुण्यांचीत भांडवल ॥ ३ ॥
तुका ह्यणे न लगे जावे वनांतरा । विश्व विश्वंभरा सारिखोंचि ॥ ४ ॥

॥ ४७६३ ॥ धन्य तें संसारी । दयावतं जे अंतरी ॥ १ ॥ येथे उप-
कारासाठी । आले घर ज्या वैकुंठी ॥ २ ॥ लाटिके वचन । नाहीं देहीं उ-
दासीन ॥ ३ ॥ मधुरा वाणी ओरी । तुका ह्यणे वाव पोटी ॥ ४ ॥

॥ ४७६४ ॥ मोकळे मन रसाळ् वाणी । या चि गुणीं संपन्न ॥ १ ॥
लक्ष्मी ते ऐशा नांवे । भाग्ये ज्यावे तरि खांनी ॥ २ ॥ नमन नम्रता अंगी ।
नेवे रंगीं पालट ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे खाच्या नांवे । घेतां व्हावे सं-
तोषी ॥ ४ ॥

॥ ४७६५ ॥ केले पाप जेणे दिले अनुपोदन । दोघांसी पतन सारि-
खे चि ॥ १ ॥ विष नवनीता विष करी संगे । हुर्जनाच्या खांगे सर्व हित
॥ २ ॥ देखिले ओढाळ निघालिया सेता । टाळावे निमित्ता थैक म्हूण
॥ ३ ॥ तुका ह्यणे जोडे केल्याविण कर्म । देखतां तो श्रम नमाविता ॥ ४ ॥

॥ ४७६६ ॥ अभिमानाची स्वामिनी शांति । महत्व घेती सकळ
॥ १ ॥ कबोनिही न कळे वर्ष । तरि श्रम पावती ॥ २ ॥ सर्व सत्ता करितां
धीर । वीर्या वीर आगळा ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे तिखट तिखे । मृदसखे
आवडी ॥ ४ ॥

॥ ४७६७ ॥ आर्तभूतांप्राति । उत्तम योजाच्या खा शक्ति ॥ १ ॥ फळ
आणि सयाधान । तेथे उत्तम कारण ॥ २ ॥ अल्पे तो संतोषी । स्थळीं
स्थांपडे उद्देसी ॥ ३ ॥ सहज संगम । तुका ह्यणे तो उत्तम ॥ ४ ॥

॥ ४७६८ ॥ आणुनियां मना । आवध्या धांडोळिल्या खुणा ॥ देखि-
ला तो राणा । पंढरपूरनिवासी ॥ १ ॥ यासी अनुसरल्या काय । घडे ऐसे
वांयां जाय ॥ देखिले ते पाय । सम जीवीं राहाती ॥ २ ॥ तो देखावा हा
विध । चितने ते कार्य सिद्ध ॥ आणिकां संबंध । नाहीं पर्वकाळासी ॥ ३ ॥
तुका ह्यणे खळ । होती क्षणेचि निर्मळ ॥ जाऊनियां मळ । वाळवंटी
नाचती ॥ ४ ॥

॥ ४७६९ ॥ बहुत सोसिले मांगे न कळतां । पुढती काय आतां अंध
च्छावे ॥ १ ॥ एकाचिये अंगीं हे ठेवावे लावून । नये भिन्ना भिन्न चांचपडो
गा ॥ २ ॥ कोण होईल तो ब्रह्मांडचाळक । आपणाचे हाक देर्इल हाके ॥ ३ ॥
तुका ह्यणे दिलीं चेतवूनि सुनीं । कौतुकावांचूनि नाहीं छळ ॥ ४ ॥

॥ ४७७० ॥ वाढालियां मान न मनावी निश्चिती । भूतांचिये प्रीति
भूतपण ॥ १ ॥ म्हणजानि मना लावावी कांचणी । इंद्रियांचे झणी ओढी

भरे ॥ २ ॥ एका एकपर्णे एकाचिये अंगीं । लागे रंग रंगी मिळलिया ॥ ३ ॥
तुका म्हणे देव निष्काष निराळा । जीवदशे चाका चलगांचा ॥ ४ ॥

॥ ४७७१ ॥ प्रारब्धा हातीं जन । सुख सीण पावतसे ॥ १ ॥ करितां
वायाळाचा संग । अगे अंग माखावें ॥ २ ॥ आविसा अंगे पीडा वसे ।
सागे असे वहु सुख ॥ ३ ॥ तुका म्हणे जीव म्याळा । अवघ्या आला
वाहेरी ॥ ४ ॥

॥ ४७७२ ॥ आशा ते कराविते बुद्धीचा लोप । संदेह ते पाप कैसे
नव्हे ॥ १ ॥ आपला आपण करावा विचार । प्रसन्न ते सार मन खाही
॥ २ ॥ नांवें रुपें अंगीं लाविला विटाळ । होतें सा निर्मळ शुद्ध बुद्ध ॥ ३ ॥
अंधक्यानें नये देखण्याची चाली । चालों ऐसी वोली तुका वोले ॥ ४ ॥

॥ ४७७३ ॥ आशा तुष्णा माया अपमानाचें वीज । नासिलिया पूज्य
होईजेते ॥ १ ॥ अर्धीरासी नाहीं चालों जातां मान । दुर्लभ दर्शन धीर
त्याचें ॥ २ ॥ तुका म्हणे नाहीं आणिकांसी वोल । वांयां जाय मोल
बुद्धीपाशी ॥ ३ ॥

॥ ४७७४ ॥ कृपेचें उत्तर देवाचा प्रसाद । आनंदीं आनंद वाढवावा
॥ १ ॥ वहुतांच्या भाग्यें लागलें जाहाज । येथे आतां काज लवलाहै ॥ २ ॥
अलभ्य ते आलें दारावरी फुका । येथे आतां चुका न पाहिजे ॥ ३ ॥ तुका
म्हणे जिव्हाश्रवणाच्या दारे । माप भरा वरे सिगवरि ॥ ४ ॥

॥ ४७७५ ॥ नये पाहों पुख यात्रागमन्याचें । तेसे अभक्ताचें गुरुपुत्रा
॥ १ ॥ ह्यणउनि वरे धरितां एकांत । तेणे नव्हे घात भजनासी ॥ २ ॥
नये हाऊं कदा निंदकासी भेटी । जया द्वैत पोटीं चांडाळाच्या ॥ ३ ॥ तु-
का म्हणे नका वोलों सासी गोष्ठी । जयाचिये दृष्टी पाप वाढे ॥ ४ ॥

॥ ४७७६ ॥ देवासाठीं जाणा तयासीच आटी । असेल ज्या गांठीं
पुण्यराशी ॥ १ ॥ निर्वला पाठवी वळे वाराणसी । गेला आला सासी अ-
र्ध पुण्य ॥ २ ॥ कथे निद्रामंग करावा भोजनीं । तया सुखा धणी पार
नाहीं ॥ ३ ॥ यागीं क्रुण घ्यावें घावें सुख लाहीं । बुढतां चिंता नाहीं उ-
भयतां ॥ ४ ॥ तुका म्हणे धर्म जाणोनि कराईं । एक न घलावें एका-
वरी ॥ ५ ॥

॥ ४७७७ ॥ अग्रीमाजी पडे धातु । लीन होउनि राहे आतु ॥ होय
शुद्ध न पवे घातु । पटतंतुप्रमाण ॥ १ ॥ वादरंगाचें कारण । मिथ्या अवघे

चि भाषण ॥ गर्व ताठा हें अज्ञान । मरण सर्वे वाहातसे ॥ २ ॥ पुरे मात-
लिया नदी । लव्हा नांदे जीवनसंधीं ॥ वृक्ष उन्मलोनि भेदी । परि तो
कधीं भंगेना ॥ ३ ॥ हस्ती परदला जो भंगी । तया पार्यीं न मरे मुंगी ॥
कोण जाय संगी । पाणोवाणी तयेच्या ॥४ ॥ पिटितां घणे वरी सैरा । तया
पोटीं रहे हिरा ॥ तैशा काय तगती गारा । तया थोरा होऊनि ॥ ५ ॥
लीन दीन हेंचि सार । भव उतरावया पार ॥ बुडे माथां भार । तुका ह्यणे
वाहोनि ॥ ६ ॥

॥ ४७७८ ॥ आशावद्ध तो जगाचा दास । पूज्य तो उदास सर्वजना
॥ १ ॥ आहे तें अधीन आपुळे हातीं । आणिकां डेविती काय बोल ॥ २ ॥
जाणातिया पाठीं लागला उपाध । नेणतां तो सिद्ध भोजनासी ॥ ३ ॥ तुका
भय वांधलेंसे गांठीं । चोर लागे पाठीं दुभतया ॥ ४ ॥

॥ ४७७९ ॥ आणिकासी तारी ऐसा नाहीं कोणी । घडतें नासुनी भल-
ता टाकी ॥ १ ॥ सोंने शुद्ध होतें भलतें तें घरीं । नासिले सोनारीं अळंकारे
॥ २ ॥ ओल शुद्धकाळीं काळे जिरे बीज । कैचे लागनिज हातां तेथे ॥ ३ ॥
एक गहूं करिती अनेक प्रकार । सांजा दिवशीं क्षीर घुगरिया ॥ ४ ॥ तुका
ह्यणे विषा रुचि एका हातीं । पाधानी नासिती नवनीत ॥ ५ ॥

॥ ४७८० ॥ वाटे या जनाचे थोर वा आश्र्य । न करिती विचार
कां हिताचा ॥ १ ॥ कोण इम ऐसा आहे याचे पोटीं । येईल शेवटीं कोण
कामा ॥ २ ॥ काय मानुनियां राहिलों निश्चिती । काय जाव देती यमदुतां ॥ ३ ॥
कां हीं विसरलीं मरण बापुडीं । काय यासी गोडी लागलीसे ॥ ४ ॥ काय
हातीं नाहीं करिल तयासी । काय झाले यासी काय जाणे ॥ ५ ॥ कां हीं
नाठविती देवकीनंदना । मुटाया बंधना पासूनियां ॥ ६ ॥ काय मोल यासी
लागे धनवित्त । कां हें याचे चित घेत नाहीं ॥ ७ ॥ तुका ह्यणे कांहीं घो-
गितिल खाणी । कां सा चक्रपाणी विसरलीं ॥ ८ ॥

॥ ४७८१ ॥ काय एकां झाले तें कां नाहीं ठावे । काय हें सांगाचे
काय म्हूण ॥ १ ॥ देखतील डोकां ऐकतील कानीं । बोलिले पुराणों तेहि
ठावे ॥ २ ॥ काय हें शरीर साच कीं जाणार । सकळ विचार जाणती हा
॥ ३ ॥ कां हें कळैं नये आपुले आपणा । बालत्व तारुण्य दृष्टदशा ॥ ४ ॥
कां हें आवडले प्रियापुत्रधन । काय कासा कोण कोणा आले ॥ ५ ॥ कां
हें जन्म वायां घातले उत्तम । कां हे रामराय न ह्यणतीं ॥ ६ ॥ काय भुली

यांसी पडली जाणतां । देखती मरतां आणिकांसी ॥ ७ ॥ काय करिती हे
बांधलिया काळें । तुका ह्यणे बळे वज्रपाशी ॥ ८ ॥

॥ ४७८२ ॥ जेणे नाहीं केले आपुले स्वहित । पुढिलांचा घात इच्छी-
तसे ॥ १ ॥ संचितासी जाय मिळोनियां खोडी । पतनाचे ओढीवरी हांव
॥ २ ॥ बांधले गांठीं तें लागले भोगावें । ऐसियासी देवें काय कीजे ॥ ३ ॥
तुका ह्यणे जया गांवां जाणे जया । पुस्तोनियां तया वाट चाले ॥ ४ ॥

॥ ४७८३ ॥ परमार्थी तो न ह्याणावा आपुला । सलगी धाकुला हेळूं नये
॥ १ ॥ थोडाचे स्कुलिंग बहुत दावाग्नि । वाढतां इंधर्नी वाढविला ॥ २ ॥
पितियानें तैसा वंदावा कुमर । जयावें अंतर देवें वसे ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे
शिरीं वाहावें खापर । माजी असे सार नवनीत ॥ ४ ॥

॥ ४७८४ ॥ पोट लागले पाठीर्णी । हिंडवितें देशोदेशी ॥ १ ॥ पो-
टाभेणे जिकडे जावें । तिकडे पोट येते सवें ॥ २ ॥ जप तप अनुष्ठान । पो-
टासाठीं झाले दीन ॥ ३ ॥ पोटे सांडियेली चवी । नीचापुढे तें नाचवी
॥ ४ ॥ पोट काशियानें भरे । तुका ह्यणे बुरझुरुं मरे ॥ ५ ॥

॥ ४७८५ ॥ असस वचन होतां सर्व जोडी । जरी लग्घडी परउपकार
॥ १ ॥ जाईल पतना यासि संरेह नाहीं । साक्ष आहे कांहीं सांगतों ते ॥ २ ॥
वदविले मुखें नारायणे धर्मा । अंगुष्ठ ला कर्मसाठीं गेला ॥ ३ ॥ तुका म्हणे
आतां सांभाळ रे पुढे । अंतरीचें कुडे देईल ठुःख ॥ ४ ॥

॥ ४७८६ ॥ आले देवाजीच्या मना । तेथे कोणाचे चालेना ॥ १ ॥
हरीश्वंद ताराराणी । वाहे डोंबावरीं पाणी ॥ २ ॥ पांडवांचा साहाकारी ।
राज्यावरोनि कले दुरी ॥ ३ ॥ तुका म्हणे उगेचि राहा । होईल तें सहज
पाहा ॥ ४ ॥

॥ ४७८७ ॥ सांगावें तें वरे असते हें पौटीं । ठुःख देते खोटी बुद्धि
मग ॥ १ ॥ आपला आपण करावा वेवढार । जिंकोनि अंतर मन ज्वाही
॥ २ ॥ नाहीं मार्गे येत बोलिले वचन । पालावा तो सीण बरा मग ॥ ३ ॥
तुका ह्यणे बहु भ्यालीं खटपटे । आतां देवा खोटे शब्द पुरे ॥ ४ ॥

॥ ४७८८ ॥ पैल घरीं झाली चोरी । देहा करी वोंब ॥ १ ॥ हावा
हावा करिसी काये । फिराऊनि नेघयां वायें ॥ २ ॥ सांडुनियां शुद्धी । नि-
जलासी गेली बुद्धि ॥ ३ ॥ चोरीं तुझा काढिला वर । वेगळे भावा घातले
हूर ॥ ४ ॥ भलतियासी देसी वाव । लाहेसी तूं एवढा ठाव ॥ ५ ॥ तुका
ह्यणे अबुनी तरी । उरले तें जतन करी ॥ ६ ॥

॥ ४७८९ ॥ किती वेळा खादला दगा । अद्वून काँ गा जागसी ना
॥ १ ॥ लाज नाहीं हिंडतां गांवें । दुःख नवें निय निस ॥ २ ॥ सवें चोरा
हातीं फांसे । देखतां कैसे न देखसी ॥ ३ ॥ तुका ह्मणे सांडिती वाट । व-
ल्पट करावया ॥ ४ ॥

॥ ४७९० ॥ मुदलामध्यें पडे तोटा । ऐसा खोटा उदीम ॥ १ ॥ आ-
णिकांची काँ लाज नाहीं । आळसा जिहीं तजिलें ॥ २ ॥ एके सांते सरि-
खीं वित्ते । हानि हित वेगळार्ही ॥ ३ ॥ तुका ह्मणे हित धरा । नव्हे पुरा
गांवढाळ ॥ ४ ॥

॥ ४७९१ ॥ निरोप सांगतां । न धरीं भय न करीं चिंता ॥ १ ॥
असो ज्याचें साचे माथां । आपण करावी ते कथा ॥ २ ॥ उतरावा भार ।
किंवा न व्हावें सादर ॥ ३ ॥ तुका म्हणे वाढे धाक । तया इह ना पर-
लोक ॥ ४ ॥

॥ ४७९२ ॥ इच्छेचें पाहिलें । डोकीं अंतीं मोकालिलें ॥ १ ॥ यांचा
विश्वास तो कायी । ऐसें विचार्णनि पाहीं ॥ २ ॥ बुगंध अभ्यंगे पाळितां ।
केश फिरले जाणतां ॥ ३ ॥ पिंड पाळितां ओसरे । अवधी घेऊनि मार्गे सरे
॥ ४ ॥ करितां उपचार । कोणा नाहीं उपकार ॥ ५ ॥ अल्प जीवन करीं ।
तुका ह्मणे सार्धीं हरी ॥ ६ ॥

॥ ४७९३ ॥ जाऊनियां तीर्थी काय तुवां केलें । चर्म प्रक्षाळिलें वरी
वरी ॥ १ ॥ अंतरीचें शुद्ध कासयानें झालें । भूषण त्वां केलें आपणया
॥ २ ॥ घुंदावन फळ घोळिलें साकरा । भतिरील थारा मोडेचिना ॥ ३ ॥
तुका ह्मणे नाहीं शांति क्षमा दया । तोंवरी कासया फुंदा तुझी ॥ ४ ॥

॥ ४७९४ ॥ जप तप ध्यान न लगे धारणा । विट्ठलकीर्तनामाजी सर्व
॥ १ ॥ राहें माझ्या मना दृढ या वचनीं । आणिक तें मर्नीं न धरावें ॥ २ ॥
कीर्तनसमाधि साधन तें मुद्रा । राहतील थारा धरोनियां ॥ ३ ॥ तुका ह्मणे
मुक्ति हरिदासांच्या घरीं । वोगळती चारी कळिसिद्धी ॥ ४ ॥

॥ ४७९५ ॥ मायबाप कारिती चिंता । पोर नाईके सांगतां ॥ १ ॥
नको जाऊं देउळासी । नेतो बागुल लोकांसी ॥ २ ॥ कर्णदारे पुराणिक ।
भुलवी शब्दें लावी भीक ॥ ३ ॥ वैष्णवां संगती । हातीं पडलीं नेणों कि-
ती ॥ ४ ॥ आम्हा कैचा मग । करिसी उघडियांचा संग ॥ ५ ॥ तुका म्हणे
जाणें नरका । खांचा उपदेश आइका ॥ ६ ॥

॥ ४७९६ ॥ तडातोडी करा । परि उत्तम तें भरा ॥ १ ॥ जेणे खंडे
एके खेपे । जाय तेथे लार्हे घोपे ॥ २ ॥ दाविल्या सारिखें । मार्गे नसावें
पारिखें ॥ ३ ॥ मार्गे पुढे ऋण । तुका ह्यणे फिटे हीण ॥ ४ ॥

॥ ४७९७ ॥ नसावें ओशाळ । मग मानिती सकळ ॥ १ ॥ जाय तेथें
पावे मान । चाले बोलिलें वचन ॥ २ ॥ राहीं नेदी वाकी । दान ज्याचें
त्यासी टाकी ॥ ३ ॥ होवा वाटे जना । तुका ह्यणे सारीं गुणां ॥ ४ ॥

॥ ४७९८ ॥ चालिती आड वाटा । आणिकां दाविती जे नीटा ॥ १ ॥
न मर्नीं तयांचे उपकार । नाहीं जोडा तो गव्हार ॥ २ ॥ विष सेवूनी वारी
मार्गे । प्राण जातां जेणे संगे ॥ ३ ॥ बुडतां हाक मारी । ठाव नाहीं आणि-
कां वारी ॥ ४ ॥ तुका ह्यणे न करीं हिका । गुण होजन अबगुण
टाका ॥ ५ ॥

॥ ४७९९ ॥ दिन दिन शंका वाढे । आयुष्य नेणवतां गाढे ॥ १ ॥
कैदीं भूललीं वापुडीं । दंभ विषयांच्या सांकडीं ॥ २ ॥ विसरलीं मरण ।
त्याची नाहीं आठवण ॥ ३ ॥ देखत देखत पाही । तुका ह्यणे आठव
नाहीं ॥ ४ ॥

॥ ४८०० ॥ सेवकासी आज्ञा स्वामीची प्रमाण । जोंवरी हा प्राण
जाय लाचा ॥ १ ॥ आणिकांचा धाक न धरावा मर्नी । निरोपावचनीं ट-
लीं नये ॥ २ ॥ समय संभालूनी आगळे उत्तर । धावें भेदी वज्र तयापरी
॥ ३ ॥ तुका ह्यणे तरी ह्यणवावें सेवक । खादलें तें अन्न हक्क होय ॥ ४ ॥

॥ ४८०१ ॥ ह्यणसी होजनी निर्धिता । हरूनियां अवर्धीं चिता ॥
मग जाऊं एकांता । भजन करूं ॥ २ ॥ संसारसंभ्रये आज्ञा लागे पाठी । तेणे
जीवा साठी होईल तुझ्या ॥ ३ ॥ सेकीं नाडसील नाडसील । विषयसंगे अवघा
नाडसील ॥ मागुता पडसील । भवडोहीं ॥ ४ ॥ शरीर सकळ मायेचा वांधा ।
यासी नाहीं कदा अराणूक ॥ ५ ॥ करिती तडातोडी आंत वाह्यात्कारी ।
ऐसे जाती चारी दिवस वेगी ॥ ६ ॥ मोलाची घडी जाते वांयांविण । न
मिळे मोल घन देतां कोडी ॥ ७ ॥ जागा होई करीं हिताचा उपाय । तुका
ह्यणे हाय करिसी मग ॥ ८ ॥

॥ ४८०२ ॥ कंथा प्रावर्ण । नव्हे भिक्षेचें तें अन्न ॥ १ ॥ करीं याप-
री स्वहित । विचारूनि धर्म नीत ॥ २ ॥ देऊळ नव्हे घर । प्रपंच परउपका-

र ॥३॥ विधिसेवन काम । नव्हे शब्द रामराम ॥ ४ ॥ हसा क्षत्रधर्म । नव्हे
निष्काम तें कर्म ॥ ५ ॥ तुका ह्यणे संती । करुनि ठेविली आइती ॥ ६ ॥

॥ ४८०३ ॥ पडोनियां राहीं । उगा च संतांचिये पायी ॥ १ ॥ न-
लगे पुसणे सांगावे । चित्त शुद्ध करी भावे ॥ २ ॥ सहज ते स्थिति । उप-
देश परयुक्ति ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे भाव । जवळी धरुनि आणी देव ॥ ४ ॥

॥ ४८०४ ॥ फळ देंठींहून झडे । मग मागुतें न जोडे ॥ १ ॥ ह्य-
णोनि तांतडी खोटी । कारण उचिताचे पोर्टी ॥ २ ॥ पुढे चढे हात ।
साग मागिलां उचित ॥ ४ ॥ तुका ह्यणे रणी । नये पाहों पर-
तोनि ॥ ५ ॥

॥ ४८०५ ॥ अगी देखोनियां सती । अंगीं रोमांच उठती ॥ १ ॥
हा तो नव्हे उपदेश । सुख अंतरीं उल्हास ॥ २ ॥ वित्तगोतांकडे ।
चित्त न घाली न रडे ॥ ३ ॥ आठवूनि एका । उडी घाली ह्यणे तुका ॥ ४ ॥

॥ ४८०६ ॥ फळ पिके देंठीं । निमिस वारी याची भेटी ॥ १ ॥
हा तों अनुभव रोकडा । कळे येतो खरा कुडा ॥ २ ॥ तोडिलिया ब-
ळे । वांयां जाती काचीं फळे ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे मन । तेथें आपुलें
कारण ॥ ४ ॥

॥ ४८०७ ॥ हालवूनि खुंट । आर्धीं करावा बळकट ॥ १ ॥ मग
तयाच्या आधारे । करणे अववेंचि वरे ॥ २ ॥ सुख दुःख साहे ।
हष्मिषीं भंगा नये ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे जीवे । आर्धीं मरोनि रा-
हावे ॥ ४ ॥

॥ ४८०८ ॥ भोग घावे देवा । साग भोर्गीं च वरवा ॥ १ ॥ आ-
पण व्हावे एकीकडे । देव कळेवरी जोडे ॥ २ ॥ योजे यथाकाळे ।
उत्तम पाला कंदे मुळे ॥ ३ ॥ वंचक सासी दोष । तुका ह्यणे मिथ्या
सोस ॥ ४ ॥

॥ ४८०९ ॥ जायांचे अंगुले लेतां नाहीं मान । शोभा नेदी जन-
हांसविलें ॥ १ ॥ घुसळितां ताक कांडितां भूस । साध्य नाहीं क्लेश जा-
ती वांयां ॥ २ ॥ तुका ह्यणे नाहीं स्वता भांडवल । भिकेचे तें फोल बीज
नव्हे ॥ ३ ॥

॥ ४८१० ॥ वळ बुद्धी वेदुनियां शक्ती । उदक चालवावे युक्ती
॥ १ ॥ नाहीं चलण तया अंगीं । धांवे लवणापागे वेर्गीं ॥ २ ॥ प्राढ-

मोट कळा । भरित पखाला सागळा ॥३॥ वीजा ज्यासी घ्यावें । तुका ह्यणे
तैसें व्हावें ॥ ४ ॥

॥ ४८११ ॥ सत्तावर्ते मन । पाळी विट्ठलाची आन ॥ १ ॥ आ-
ज्ञा वाहोनियां शिरीं । सांगितलें तेंचि करीं ॥ २ ॥ सरलीसे धांव
नलगे वाढवावी हांव ॥ ३ ॥ आहे नाहीं खाचें । तुका ह्यणे कळे
साचें ॥ ४ ॥

॥ ४८१२ ॥ संचिताचि खावें । पुढे कोणाचें न घ्यावें ॥ १ ॥ आ-
तां पुरे हे चाकरी । राहीं वैसोनियां वरीं ॥ २ ॥ नाहीं काम हा-
तीं । आराणूक दिवसराती ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे सत्ता । पुरे पराधीन
आतां ॥ ४ ॥

॥ ४८१३ ॥ ज्याचे गांवीं केला वास । खासी नसावें उदास ॥ १ ॥
तरीच जोडिलें तें भोगे । कांहीं आघात नलगे ॥ २ ॥ वाढवावी थो-
री । मुखें ह्यणे तुझे हरी ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे हे गोमटी । दासा न घा-
लावी तुटी ॥ ४ ॥

॥ ४८१४ ॥ भक्तिभाव आम्ही वांधिलासे गांठी । सादावित्तों हार्दी
घ्या रे कोणी ॥ १ ॥ सुखाचिया पेंठे घातलें डुकान । मांडियेलें वान
रामनाम ॥ २ ॥ सुखाचें फुकाचें सकळांचें सार । तरावया पार भव-
सिंधु ॥ ३ ॥ मार्गे भाग्यवंत झाले थोर थोर । तिहीं केला फार हा-
चि सांठा ॥ ४ ॥ खोटें कुडे तेथें नाहीं घातपात । तुका ह्यणे चित्त शुद्ध
करीं ॥ ५ ॥

॥ ४८१५ ॥ एक शेरा अन्ना चाड । येर वाडगी बडबड ॥ १ ॥ कां
रे तृष्णा वाढविसी । वांधवूनि मोहपाशीं ॥ २ ॥ औट हात तुझा जागा ।
येर सिणसी वाडगा ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे श्रम । एक विसरतां
राम ॥ ४ ॥

॥ ४८१६ ॥ आलें धरायाचे पेंठे । पुढे मागुतें न भेटे ॥ १ ॥ होसी
फजीती वरपडा । लक्ष चौन्यासीचे वेढां ॥ २ ॥ नाहीं कोणांचा सांगात ।
दुःख भोगितां आघात ॥ ३ ॥ एका पाउलाची वाट । कोणां सांगावा वो-
भाट ॥ ४ ॥ जुंतिजेसी घाणां । नाहीं मारित्या करुणा ॥ ५ ॥ तुका ह्यणे
हित पाहें । जौवरि हें हातीं आहे ॥ ६ ॥

॥ ४८१७ ॥ सिंचन करितां मूळ । दृक्ष ओलावे सकळ ॥ १ ॥ नको
पृथकाचे भरी । पडों एक मूळ धरीं ॥ २ ॥ पाणचोन्याचें दार । वारिल

दायांवं तें थोर ॥ ३ ॥ वश झाला राजा । मग आपुल्या सा प्रजा ॥ ४ ॥
एक चितामणी । फिटे सर्व सुखधणी ॥५॥ तुका ह्यणे धांवा । आहे पंढरी
विसांवा ॥ ६ ॥

॥ ४८१८ ॥ काळ जवळी उभा नेणां । घाली झांपडी खुंटी काना ॥१॥
कैसा हुशार सावध राही । आपुला तूं आपले ठारी ॥ २ ॥ काळ जवळीच
उभा पाही । नेदी कोणासी देऊं कांही ॥३॥ काळे पुरविली पाठी । वरुषे झाली
साठी ॥ ४ ॥ काळ भोवताला भोवे । राम येऊ नेदी जिव्हे ॥५॥ तुका ह्यणे
काळा । कर्म भिळतें तें जाळा ॥ ६ ॥

॥ ४८१९ ॥ दुष्ट भूषण सज्जनार्चे । अलभ्यलाभ पुण्य सार्चे ॥ १ ॥
धन्य ऐसा परउपकारी । जाय नरका आणिकां वारी ॥ २ ॥ मळ खाये
संबदणी । करी आणिकांची उजळणी ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे साचा । प्रीति
आदर करा साचा ॥ ४ ॥

॥ ४८२० ॥ साहोनियां टांकीघाये । पाषाण देवचि झाला पाहे ॥१॥
तया रीती दृढ मन । करीं साधाया कारण ॥ २ ॥ वाण शळ साहे गोळी ।
शूरां ठाव उंच स्थळी ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे सती । अग्न न देखे ज्या-
रीती ॥ ४ ॥

॥ ४८२१ ॥ संदेह बाधक आपआपणार्थार्ते । रज्जुसर्पवत भासतसे ॥
भेऊनियां काय देखिलें येणे । मारें घायेविण लोळतसे ॥ १ ॥ आपण चि
तारी आपण चि मारी । आपण उड्डरी आपणयां ॥ शुकनक्किकेन्यायें
गुंतलासी काय । विचारूनि पाहे मोकळिया ॥ २ ॥ पापपुण्य कैसे भांजिले
अंक । दशकाचा एक उराविला ॥ जाणोनियां काय होतोसी नेणता । शून्या
ठाव रिता नाहीं नाहीं ॥ ३ ॥ दुरा दृष्टी पाहे न्याहाळूनि । मृगजला पाणी
ने ह्यणे चाढा ॥ धांवतां चि फुटे नव्हे समाधान । तुका ह्यणे जाण
पावे पीडा ॥ ४ ॥

॥ ४८२२ ॥ ऐसे कां हो न करा कांहीं । पुढे नाहीं नास ज्या ॥१॥
विश्वंभरा शरणागत । भूतजात वंदूनि ॥ २ ॥ श्रुतीर्चे कां नेवा फळ । सार-
मूळ जाणोनि ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे पुढे कांहीं । वाट नाहीं यावरी ॥ ४ ॥

॥ ४८२३ ॥ कथे उभा अंग राखेल जो कोणी । ऐसा कोण गणी
तया पापा ॥१॥ येणे तो पातकी नयेता च भला । रणीं कुचरला काय चा-

ले ॥ २ ॥ कथे बैसोनी आणिक चर्चा । धिग त्याची वाचा कुंभपाक ॥३ ॥
तुका ह्यणे ऐल पैल ते थडिचे । बुडतील साच मध्यभार्गो ॥ ४ ॥

॥ ४८२४ ॥ कलत्रुखालीं । फळे येती माणीतर्लीं ॥ १ ॥ तेथें बैस-
ल्याचा भाव । विचारूनि बोलें ठाव ॥ २ ॥ वावें तें उत्तर । येतों प्रतित्या-
चा फेर ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे मर्नीं । आपुल्याचि लाभहानि ॥ ४ ॥

॥ ४८२५ ॥ पायरवे अन्न । मग करी क्षीदक्षीण ॥ १ ॥ ऐसे होती
घातपात । लाभे विण संगें थीत ॥ २ ॥ जन्माची जोडी । वाताहात एके
घडी ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे शंका । हित आड वा लौकिका ॥ ४ ॥

॥ ४८२६ ॥ वीज पेरे सेतीं । मग गाडेवरी वाहाती ॥ १ ॥ वांयां गेलें
ऐसें दिसे । लाभ साचे अंगीं वसे ॥ २ ॥ पाल्याची जतन । तरि प्रांतीं
येती कण ॥ ३ ॥ तुका म्हणे आळा । उदक देतां लाभे फळा ॥ ४ ॥

॥ ४८२७ ॥ नाहीं पाइतन भूपतीशीं दावा । धिग त्या कर्तव्या आगी
लागो ॥ १ ॥ सुंगियांच्या मुखा गजाचा आहार । न साहावे भार जाय
जीवें ॥ २ ॥ तुका म्हणे आधीं करावा विचार । शूरपणे तीर मोक-
लावा ॥ ३ ॥

॥ ४८२८ ॥ नका धरूं कोणी । राग वचनाचा मर्नीं ॥ १ ॥ येथे
बहुतांचे हित । शुद्ध करोनि राखा चित्त ॥ २ ॥ नाहीं केली निंदा । आही
दृष्टिलेंसे भेदा ॥ ३ ॥ तुका म्हणे मज । येणेविण काय काज ॥ ४ ॥

॥ ४८२९ ॥ शुधेलिया अन्न । वावें पात्र न विचारून ॥ १ ॥ धर्म
आहे वर्मा अंगीं । कळलें पाहिजे प्रसंगीं ॥ २ ॥ द्रव्य आणि कन्या ।
येथें कुळ कर्म सोधण्या ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे पुण्य गांडी । तरिच उचितासी
भेटी ॥ ४ ॥

॥ ४८३० ॥ कर्कशसंगती । दुःख उदंड फजिती ॥ १ ॥ नाहीं इह ना
परलोक । मजुर दिसे जैसें रंक ॥ २ ॥ वचन सेंटावरी । त्याचें ठेवूनि धि-
कारी ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे पार्यीं वेडी । पहिली कपाळीं कुच्छाडी ॥ ४ ॥

॥ ४८३१ ॥ जाणावें तें सार । नाहीं तरी दगा फार ॥ १ ॥ डोळे
झांकिलिया रवि । नाहीं ऐसा होय जेवीं ॥ २ ॥ बहुथोड्या आड । निवा-
रितां लाभें जाड ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे खरें । नेलें हातींचे अंधारें ॥ ४ ॥

॥ ४८३२ ॥ मुळीं नेणपण । झाला तरी अभिमान ॥ १ ॥ वांयां जावें
होचि खरें । केलें तेणेचि प्रकारें ॥ २ ॥ अराणूक नाहीं कर्वीं । झाली तरी
भेदबुद्धि ॥ ३ ॥ अंतरली नाव । तुका ह्यणे नाहीं ठाव ॥ ४ ॥

॥ ४८३३ ॥ संवसारसंते आले हो आइका । तुटीचें तें नका कोण्ठं
भरूं ॥ १ ॥ लाभाचा हा काळ अवघे विचारा । पारखी ते करा साहा येथे
॥ २ ॥ शृंगारिलें दिसे न कळे अंतर । गोविला पदर उगवेना ॥ ३ ॥ तुका
ह्यणे खोटें गुंपतां विसारे । हातिचिया खरें हातीं घ्यावें ॥ ४ ॥

॥ ४८३४ ॥ सारावीं लिगाडे घरावा भुपंथ । जावें उसंतीत हळूहळू
॥ १ ॥ पुढे जातियाचे उमटले माग । भाँवावलें जग आडराने ॥ २ ॥ वेच-
ल्याचा पाहे वरावरि झाडा । बळाचा निघडा पुढिलिया ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे
जैसी दाखवावी वाणी । ते घावी भरोनी शेवट तो ॥ ४ ॥

॥ ४८३५ ॥ बुद्धिमंदा शिरीं । भार फजिती पदरीं ॥ १ ॥ जाय तेथें
अपमान । पावे हानि थुंकी जन ॥ २ ॥ खरियाचा पाड । मार्गे लावावें लि-
गाड ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे करी । वर्ष नेणे भरोवरी ॥ ४ ॥

॥ ४८३६ ॥ पूर्वजांसी नका । जाणें तें एक आइका ॥ १ ॥ निंदा
करावी चाहाडी । मर्नीं धरूनि आवडी ॥ २ ॥ मात्रागमना ऐसी । जोडी
पातकांची रासी ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे वाट । कुंभपाकाची ते नीट ॥ ४ ॥

॥ ४८३७ ॥ आवडीचें दान देतो नारायण । बाहे उभारोन राहि-
लासे ॥ १ ॥ जें जयासीं रुचे तें करी समोर । सर्वज्ञ उदार मायबाप ॥ २ ॥
ठार्यीं पडिलिया तेंचि लागे खावें । ठार्यींचेचि घ्यावें विचारूनि ॥ ३ ॥
बीज पेस्तुनियां तेंचि घ्यावें फळ । डोरलीस केळ कैचे लागे ॥ ४ ॥ तुका
ह्यणे देवा कांहीं बोल नाहीं । तुझा तूंचि पाहीं शत्रु सखा ॥ ५ ॥

॥ ४८३८ ॥ खोऱ्याचा विकरा । येथे नव्हे कांच हिरा ॥ १ ॥ काय
दावायाचे काम । उगाच वाढवावा श्रम ॥ २ ॥ परीक्षकाविण । मिरवों जा-
तें तें हीण ॥ ३ ॥ तुका पांयां पडे । वाइ पुरे हे झगडे ॥ ४ ॥

॥ ४८३९ ॥ नयो वाचे अनुचित वाणी । नसो मर्नीं कुडी बुद्धि ॥ १ ॥
ऐसें मागा अरे जना । नारायणा विनवूनि ॥ २ ॥ कामक्रोधां पडो चिरा ।
ऐसा वरा सायास ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे नानाछळें । या विनोदें न पडावें ॥ ४ ॥

॥ ४८४० ॥ ऐका जी संतजन । सादर मन करूनि ॥ १ ॥ सकळांचे
सार एक । कंटक ते सजावे ॥ २ ॥ विशेषता कांद्याहूनि । सेवित्या घाणी
आगळी ॥ ४ ॥ तुका ह्यणे ज्याची जोडी । ते परवडी बैसजि ॥ ४ ॥

॥ ४८४१ ॥ बरं सावधान । राहावें समय राखोन ॥ १ ॥ नाहीं सा-
रखिया वेळां । अवघ्या पावतां अवकळा ॥ २ ॥ लाभ अथवा हानी । थो-

ड्यामध्येंच भोवनी ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे राखा । आपणा नाहीं तोंचि
बाखा ॥ ४ ॥

॥ ४८४२ ॥ रंगीं रंगे रे श्रीरंगे । काय भुललासी पतंगे ॥ १ ॥ शरी-
र जायाचें ठेवणे । घरिसी अभिक्लास झणे ॥ २ ॥ नव्हे तुळा हा परिवार ।
द्रव्य दारा क्षणभंगूर ॥ ३ ॥ अंतकाळींचा सोइरा । तुका ह्यणे विठो
धरा ॥ ४ ॥

॥ ४८४३ ॥ डोळ्यामध्ये जैसे कणु । अणु तेंहि न समाये ॥ १ ॥
तैसे शुद्ध करीं हित । नका चित्त बाटवूं ॥ २ ॥ आपल्याचा कळवळा । आ-
णिका बाळावरि नये ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे बीज मुडा । जैशा चाढा
पिकाच्या ॥ ४ ॥

॥ ४८४४ ॥ कथनी पठणी करूनि काय । वांचुनि रहणी वांया जाय
॥ १ ॥ मुखीं वाणी अमृतगोडी । मिथ्या भुक्ते चरफडी ॥ २ ॥ पिळणी
पाक करितां दगडा । काय जडा होय तें ॥ ३ ॥ मधु मेळवूनि माशी । आ-
णिका सांसी पारधिया ॥ ४ ॥ मेळजूनि धन मेळवी माती । लोभ्या
हातीं तेंचि मुखीं ॥ ५ ॥ आपले केले आपण खाय । तुका वंदी त्याचे
पाय ॥ ६ ॥

॥ ४८४५ ॥ विचा पीडी नांगी । ज्याचा दोष त्याचे अंगी ॥ १ ॥
केला पाहिजे विचार । मन मित्र दावेदार ॥ २ ॥ मधुरा उत्तरीं । रांवा
खेळे उरावरी ॥ ३ ॥ तुका म्हणे रेडा । मुखें जाती ऐशा पीडा ॥ ४ ॥

॥ ४८४६ ॥ ऐसा कोणी नाहीं हैं जया नावडे । कन्या पुत्र घोडे
दारा धन ॥ १ ॥ निंब घेतें रोगी कवणिया सुखें । हरावया दुःखें व्या-
धि पीडा ॥ २ ॥ काय पळे सुखें चोरा लागें पाठी । न घलावी का
ठी आड तया ॥ ३ ॥ जयाचे कारण तोचि जाणे करूं । नये कोणा
वारूं आणिकासी ॥ ४ ॥ तुका ह्यणे तरी सांपडे निधान । द्यावा औंवाळून
जीव बळी ॥ ५ ॥

॥ ४८४७ ॥ मागील ते आटी येणे घडे सांग । सुतवेल अंग एका
मूळे ॥ १ ॥ पहिपाहुणेर ते सोहळ्यापुरते । तेथूनि आरते उपचार ते ॥ २ ॥
आवश्यक तेथें आगळा आदर । चाली थोडे फार संपादते ॥ ३ ॥ तुका
म्हणे क्रुण फिटे एके घडी । अलभ्य ते जोडी हातां आल्या ॥ ४ ॥

॥ ४८४८ ॥ आपुलिया हिता जो असे जागता । धन्य माता पिता
तयाचिया ॥ १ ॥ कुळीं कन्यापुत्र होतीं जीं सात्विक । तयाचा हरिख वाटे
देवा ॥ २ ॥ गीता भागवत करिती श्रवण । अखंड चिंतन विठोबाचें ॥ ३ ॥
तुका म्हणे मज घडो त्याची सेवा । तरी माझ्या दैवा पार नाही ॥ ४ ॥

॥ ४८४९ ॥ आपुले वेचूनि खोडा घाली पाव । ऐसे जया भाव हीन
तुद्धि ते ॥ १ ॥ विषयांच्या संगे आयुष्याचा नास । पडियेले ओस स्वाहिता-
चें ॥ २ ॥ भुलल्याचें अंग आपणा सारिखें । छंदाच सारिखें वर्ततसे ॥ ३ ॥
तुका म्हणे दुःख उमटे परिणामीं । लंपटासी कापीं रतलिया ॥ ४ ॥

॥ ४८५० ॥ एकाचिया घाट्या टोके । एक फिके उपचार ॥ १ ॥
ऐसी सवे गोवळिया । भाव तया पढियंता ॥ २ ॥ एकाचें तें उच्छिष्ट
खाय । एका जाय ठकवूनि ॥ ३ ॥ तुका ह्याणे वहु सोपें । वहु रूपें
अनंत ॥ ४ ॥

॥ ४८५१ ॥ काय लवणकणिकेविण । एके क्षीण सागर ॥ १ ॥ मां
हे येवढी अडचण । नारायणीं मजविण ॥ २ ॥ कुबेर अटाहास जोडी ।
काय कवडी कारणें ॥ ३ ॥ तुका ह्याणे काचमणि । कोण गणी
भांडारी ॥ ४ ॥

॥ ४८५२ ॥ कौडीकौडीसार्टीं फोडिताती शिर । काढुनि रुधिर मलंग
ते ॥ १ ॥ पांघरती चर्म लोहाची सांकळी । मारिती आरोडी धैर्यबळे
॥ २ ॥ तुका ह्याणे खांचा नव्हेचि स्वर्धर्म । न कळेचि वर्म गोविंदाचें ॥ ३ ॥

॥ ४८५३ ॥ ज्याची जया आस । तयाजवळी खा वास ॥ १ ॥ येर
जवळी तें दुरी । धेनु वत्स सांडी घरीं ॥ २ ॥ गोडी प्रियापाशीं । सुख उपजे
येरासीं ॥ ३ ॥ तुका ह्याणे बोल । घडे तयाठार्यां मोल ॥ ४ ॥

॥ ४८५४ ॥ तरिच होय वेडी । नम होय घडफुडी ॥ १ ॥ काय बो-
लाचें गैरव । आंत वरी दोन भाव ॥ २ ॥ मृगजळा न्याहाळितां । तान
न वजाये सेवितां ॥ ३ ॥ न पाहे आणिकाची आस । शूर बोलिजे तयास
॥ ४ ॥ तुका ह्याणे या लक्षणे । संत अळंकार लेणे ॥ ५ ॥

॥ ४८५५ ॥ जिकावा संसार । येणे नांवें तरी शूर ॥ १ ॥ येणे
काय तीं वापुडीं । कीर अहंकाराची घोडी ॥ २ ॥ पण ऐशा नांवें ।
देव धरिजेतो भावें ॥ ३ ॥ तुका ह्याणे ज्याचें । सत्य कीर्तीने
वरवें ॥ ४ ॥

॥ ४८५६ ॥ घरोघरीं अवधें ज्ञालें ब्रह्मज्ञान । परि मेळवण बहु माझी
॥ १ ॥ निरे कोणापाशीं होय एक रज । तरि द्या रे मज दुर्बळासी ॥ २ ॥
आशा तृष्णा माया कालबूनि दोन्ही । दंभ तो दूरोनि दिसतसे ॥ ३ ॥
काम क्रोध लोभ सिणवी बहुत । मेळवूनि आंत काळकूट ॥ ४ ॥ तुका ह्यणे
तेथें कांहीं हातां नये । आयुष्य मोलें जाये वांयांविण ॥ ५ ॥

॥ ४८५७ ॥ भावें गावें गीत । शुद्ध करुनियां चित्त ॥ १ ॥ तुज
ब्हावा आहे देव । तरि हा सुलभ उपाव ॥ २ ॥ आणिकांचे कानीं । गुण
दोष मना नाणीं ॥ ३ ॥ मस्तक ठेंगणा । करीं संतांच्या चरणा ॥ ४ ॥
वेचीं तें वचन । जेणे राहे समाधान ॥ ५ ॥ तुका ह्यणे फार । थोडा तरी पर
उपकार ॥ ६ ॥

॥ ४८५८ ॥ वचन तें नाहीं तोडीत शरीरा । भेदत अंतरा वज्राएरें
॥ १ ॥ कांहीं न साहावे काशा ही कारणे । संदेह निधान देह बळी ॥ २ ॥
नाहीं शब्द मुखीं लागत तिखट । नाहीं जड होत पोट तेणे ॥ ३ ॥ तुका
ह्यणे जरी गिळे अहंकार । तरी वसे घर नारायण ॥ ४ ॥

॥ ४८५९ ॥ नव्हां आतां जीवीं कपटवसती । मग काकुळती कोणा
यावे ॥ १ ॥ सत्याचिये मापें गांठीं नये नाड । आदि अंत गोड नारायण
॥ २ ॥ चोखाटिया नाहीं विटाळाचा आघात । साच तें साचांत सांचा पडे
॥ ३ ॥ विचारिली वाट उसंत सीतल । बुद्धिपुढे बळ तृणतुल्य ॥ ४ ॥
आहाराच्या घासें पचोनियां जीरे । वासना ही उरे उर्वरीत ॥ ५ ॥ तुका
ह्यणे ताळा घालावा वचनीं । तूं माझी जननी पांडुरंगा ॥ ६ ॥

॥ ४८६० ॥ वैष्णवमुनिविप्रांचा सन्मान । करावा आपण घेऊं नये ॥ १ ॥
प्रभु ज्ञाला तरी संसाराचा दास । विहित तयास यांची सेवा ॥ २ ॥ तुका
ह्यणे हे आशीर्वाद बळी । जाईल तो छळी नरका यासीं ॥ ३ ॥

॥ ४८६१ ॥ दह्यांचिया अंगीं निघे ताक लोणी । एका मोलें दोन्ही
मागों नये ॥ १ ॥ आकाशाचे पोटीं चंद्र तारांगणे । दोहींशी समान पाहों
नये ॥ २ ॥ पृथ्वीचा पोटीं हिरा गारगोटी । दोहींसी संसाटी करूं न-
ये ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे तैसे संत आणि जन । दोहींसी समान भजूं नये ॥ ४ ॥

॥ ४८६२ ॥ तारिच जन्मा यावे । दास विठ्ठलाचे व्हावे ॥ १ ॥ नाहीं
तरि काय थोर्डीं । श्वानशूकरे बापुडीं ॥ २ ॥ ज्याल्याचे तें फळ । अंगीं
लागों नेदी मळ ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे भले । ज्याच्या नांवे मानवलें ॥ ४ ॥

॥ ४८६३ ॥ दिकाचि या नाहीं संसारसंबंधा । तुटेना या बाधा भवरी-
गाची ॥ १ ॥ तांतडींत करीं ह्यणजनि तांतडी । साधिली ते घडी सोनि-
याची ॥ २ ॥ संकल्पाच्या वीजें इंद्रियांची चाली । प्रारब्ध तें घालीं गर्भ
वासीं ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे वीजें जाळूनी सकळ । करावा गोपाळ आपु-
ला तो ॥ ४ ॥

॥ ४८६४ ॥ लावुनि काहाळा । सुखें करितों सोहळा ॥ १ ॥ साद-
वीत गेलों जना । भय नाहीं सूत्य जाणां ॥ २ ॥ गात नाचत विनोदें ।
टाळघागन्यांच्या छंदें ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे भेव । नाहीं पुढे येतो
देव ॥ ४ ॥

॥ ४८६५ ॥ जेणे वाढे अपकीर्ति । सवार्थीं तें वर्जावें ॥ १ ॥ सख
रुचे भलेपण । वचन तें जगासी ॥ २ ॥ होइजे तें शुद्ध त्यागें । वाउगें तें
सारावें ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे खोटें वर्म । निंद्यकर्म काळीमा ॥ ४ ॥

॥ ४८६६ ॥ नाहीं लोपें येत गुण । वेधी आणीके चंदन ॥ १ ॥
न संगतां पडे ताळा । रूप दर्पणीं सकळां ॥ २ ॥ सारविले वरी ।
आहाच ते क्षणभरी ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे वोहळें । सागराच्या ऐसें
च्छावें ॥ ४ ॥

॥ ४८६७ ॥ नये स्तवूं काच होतें क्रियानष्ट । फुंदाचे ते कष्ट भेंगा
मूळ ॥ १ ॥ नाहीं परमार्थ साधत लौकिकें । धरून होतों फिकें अंगा
आलें ॥ २ ॥ पाराखया पुढे नये घालूं तोङ । तुटी लाभा खंड होतो मा-
ना ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे तरी मिरवते परवडी । कामावल्या गोडी अवि-
नाश ॥ ४ ॥

॥ ४८६८ ॥ देवाचिये चाडे प्रमाण उचित । नये वांदू चित्त निषे-
धासीं ॥ १ ॥ नये राहों उर्भे कसमलापासी । भुंकतील तैसीं सांडावीं
तीं ॥ २ ॥ तुका ह्यणे क्षमा सुखाचिये रासी । सांडोनि कां ऐसी दुः-
खी च्छावें ॥ ३ ॥

॥ ४८६९ ॥ जग ऐसें बहु नांवें । बहु भावे भावना ॥ १ ॥ पाहों
चोलों बहु नये । सत्य काय सांभाळा ॥ २ ॥ कारियासी जे कारण । तें ज
तन करावें ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे संतजनीं । हेंचे मर्नीं धरावें ॥ ४ ॥

॥ ४८७० ॥ निघालें तें अग्निहूनि । आतां झणी आतळे ॥ १ ॥
पच्चा परपरतें दुरी । आतां हरे येथूनि ॥ २ ॥ धारिलें तैसें श्रुत करा हो ।

येथे आहो प्रपंची ॥ ३ ॥ अबोल्यानें ठेला तुका । भेजाने लोकां
निराळा ॥ ४ ॥

॥ ४८७१ ॥ सकळ पूजा स्तुति । करावी ते घावें याती ॥ १ ॥ ह्या-
णजनि वारा जन । संतपूजा नारायण ॥ २ ॥ सेवावें तें वरी । दावी उ-
मदूनि ढेकरी ॥ ३ ॥ तुका ह्याणे सुरा । दुधा ह्याणतां केवीं बरा ॥ ४ ॥

॥ ४८७२ ॥ धीर नव्हे मने । कायं तयापाशीं उणे ॥ १ ॥ भार घात-
लियावरी । दासां नुपेक्षील हरी ॥ २ ॥ याएसी आटी । घावी द्रव्याचिये
साटी ॥ ३ ॥ तुका ह्याणे पोटे । देवा बहु केले खोटे ॥ ४ ॥

॥ ४८७३ ॥ द्रव्याचिया कोटी । नये गांडीची लंगोटी ॥ १ ॥ अंतीं
बोल्वणेसाठीं । पांडुरंग धरा कंठीं ॥ २ ॥ लोभाचीं लोभिके । यांचे सन्नि-
धान फिके ॥ ३ ॥ तुका ह्याणे हिते । जग नव्हो पडो रिते ॥ ४ ॥

॥ ४८७४ ॥ जळों अगी पडो खाण । नारायण भोगिता ॥ १ ॥
ऐसी ज्याची वदे वाणी । नारायणीं ते पावे ॥ २ ॥ भोजनकाळीं क-
रितां धंदा । ह्याणा गोविंदा पावले ॥ ३ ॥ तुका ह्याणे न लगे मोल ।
देवा बोल आवडती ॥ ४ ॥

॥ ४८७५ ॥ मेला तरी जावो सुखें नरकासी । कळंकी याविशीं शि-
वां नये ॥ १ ॥ रजस्वला करी वेलासी आघात । अंतरे तों हित दुरी
वरे ॥ २ ॥ उगी चकां आली नासवारीं फळे । विटाळ विटाळे काळ-
वूनि ॥ ४ ॥ तुका ह्याणे लोणी घालोनि शेणांत । उपेगाची मात काय
असे ॥ ५ ॥

॥ ४८७६ ॥ अतिसाईं बुडे गंगे । पाप लागे खाचें ला ॥ १ ॥ हें तो
आपुलिया गुणे । असे जेणे योजिले ॥ २ ॥ अवघटे अग्नि जाळी । न सां-
भाळी डुःख पावे ॥ ३ ॥ जैसें तैसें दावी आरसा । नकव्या कैसा पा-
लटे ॥ ४ ॥

॥ ४८७७ ॥ फळकट तो संसार । येथे सारभगवंत ॥ १ ॥ ऐसे जाग-
वितीं मना । सरसें जना सहित ॥ २ ॥ अवघे निरसूनी काम । घ्यावें नाम
विठोवाचे ॥ ३ ॥ तुका म्हणे देवाविण । केला सीण तो मिथ्या ॥ ४ ॥

॥ ४८७८ ॥ एका एक साहा करूं । अवघे धरूं सुपंथ ॥ १ ॥ कोण
जाणे कैसी परी । पुढे उरी ठेवितां ॥ २ ॥ अवघे धन्य होऊं आतां । स्मरवि-
तां स्मरण ॥ ३ ॥ तुका म्हणे अवघी जोडी । ते आवडी चरणाची ॥ ४ ॥

॥ ४८७९ ॥ आपुलें आपण जाणावें स्वहित । जैं राहे चित्त समाधान ॥ १ ॥ बहुरंगे माया असे विखरली । कुंटित चि चाली होतां वरी ॥ २ ॥ पूजा ते अबोला चित्ताच्या प्रकारीं । भाव विश्वंभरीं समर्पावा ॥ ३ ॥ तुका म्हणे गेला फिटोनियां भेद । मग होतो देव मनाचा चि ॥ ४ ॥

॥ ४८८० ॥ भल्याचें कारण सांगावें स्वहित । जैसी कळे नीत आपणासी ॥ १ ॥ परी आम्ही असौं एकाचिये हातीं । नाचवितो चित्ती साचें तैसे ॥ २ ॥ वाट सांग त्याच्या पुण्या नाहीं पार । होती उपकार अगणित ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे तुक्की बहू कृपावंत । आपुले उचित केलं संती ॥ ४ ॥

॥ ४८८१ ॥ कायावाचामने झाला विष्णुदास । काम क्रोध सास बाधीतना ॥ १ ॥ विश्वास तो करी स्वामीवरी सत्ता । सकळ भोगिता होय साचें ॥ २ ॥ तुका ह्यणे चित्त करावें निर्मळ । येऊनि गोपाळ राहे तेथे ॥ ३ ॥

॥ ४८८२ ॥ चुकलिया ताळा । वाती घालूनि बैसे ढोळा ॥ १ ॥ तैसे जागें करी चित्ता । कांहीं आपुलिया हिता ॥ २ ॥ निक्षेपिलें धन । तेथे गुंतलेसे मन ॥ ३ ॥ नासिवंतासाठीं । तुका ह्यणे करिसी आदी ॥ ४ ॥

॥ ४८८३ ॥ करूनि जतन । कोणा कामा आलें धन ॥ १ ॥ ऐसे जाणतां जाणतां । कां रे होतोसी नेणता ॥ २ ॥ प्रिया पुत्र बंधु । नाहीं तुज यांशीं संबंधु ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे एका । हरीविण नाहीं सखा ॥ ४ ॥

॥ ४८८४ ॥ आमची जोडी ते देवाचे चरण । करावें चिंतन विठोबाचे ॥ १ ॥ लागेल तरी कोणी ध्यावें धरणीवरी । आमुपचि वरी आवडीच्या ॥ २ ॥ उभारिला कर प्रसिद्ध या जग । करूं केला त्याग मागें पुढे ॥ ३ ॥ तुका ह्यणे होय दरिद्र विच्छिन्न । ऐसे देऊं दान एकवेळे ॥ ४ ॥

॥ ४८८५ ॥ ऐका गाये अवघे जन । थुळ मन तें हित ॥ १ ॥ अवघा काळ नव्हे जरी । समयावरी जाणावें ॥ २ ॥ नाहीं कोणी सवें येता । सचिता या वेगळा ॥ ३ ॥ बरवा अवकाश आहे । करा साहे इंद्रि-